संकटमोचन हनुमानाष्टक

इन पाठों के बारे में

स्रोत — हर पाठ अपने स्रोत, परम्परा और संस्करण के साथ छपा है। अन्य परम्पराओं और संस्करणों में शब्दों में थोड़ा अन्तर हो सकता है।

लिप्यन्तरण — रोमन पंक्ति देवनागरी से बना IAST लिप्यन्तरण है (ā = दीर्घ आ, ṃ = अनुस्वार, ḥ = विसर्ग, ś/ṣ = श/ष, c = च)। हिन्दी, अवधी और ब्रज पाठों में शब्द के अन्त का मौन 'अ' नहीं लिखा जाता। लिप्यन्तरण में वैदिक स्वर नहीं दिखते।

संकटमोचन हनुमानाष्टक

प्रकार	अष्टकम्
देवता	श्री हनुमान
संस्करण	मिलान किया गया पाठ
परम्परा	वैष्णव
स्रोत	पारम्परिक भक्ति पाठ (प्रचलित मुद्रित एवं मौखिक रूप) — Narayan & Co. (Patna) Hanuman Chalisa booklet, pages 19–21; archive.org moeg_shri-hanuman-chalisa-prabhavshali-tantrik-hanuman-yantra-pujan-vidhi-sahit- leaves 20–22
आभार	पाठ नारायण एण्ड कं. (पटना) की हनुमान चालीसा पुस्तिका, पृष्ठ 19–21 (archive.org स्कैन) से लिया और दो अन्य प्रतियों से मिलाया गया। सार और अर्थ: उद्योग ज्योतिष सम्पादकीय टीम।
कॉपीराइट	Traditional devotional text in wide circulation, attributed to Goswami Tulsidas (16th–17th century); public domain. Tran

बाल समय रवि भक्षि लियो तब, तीनहुँ लोक भयो अँधियारो ।

bāl samay ravi bhakṣi liyo tab, tīnahum lok bhayo am dhiyāro |

ताहि सों त्रास भयो जग को, यह संकट काहु सों जात न टारो ।

tāhi soṃ trās bhayo jag ko, yah saṃkaṭ kāhu soṃ jāt na ṭāro |

देवन आनि करी विनती तब, छाँड़ि दियो रवि कष्ट निवारो ।

devan āni karī vinatī tab, chām ṛi diyo ravi kaṣṭa nivāro |

को नहिं जानत है जग में कपि, संकट मोचन नाम तिहारो ॥१॥

ko nahiṃ jānat hai jag meṃ kapi, saṃkaṭ mocan nām tihāro ||1||

बालि की त्रास कपीस बसै गिरि, जात महाप्रभु पंथ निहारो ।

bāli kī trās kapīs basai giri, jāt mahāprabhu paṃth nihāro |

चौंकि महा मुनि साप दियो तब, चाहिय कौन बिचार बिचारो ।

cauṃki mahā muni sāp diyo tab, cāhiya kaun bicār bicāro |

कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु सो, तुम दास के शोक निवारो ॥२॥

kai dvij rūp livāy mahāprabhu so, tum dās ke śok nivāro ||2||

अंगद के संग लेन गये सिय, खोज कपीस यह बैन उचारो ।

aṃgad ke saṃg len gaye siya, khoj kapīs yah bain ucāro |

जीवत ना बचिहौं हम सों जु, बिना सुधि लाए इहाँ पगु धारो ।

jīvat nā bacihauṃ ham soṃ ju, binā sudhi lāe ihām pagu dhāro |

हेरि थके तट सिन्धु सबै तब, लाय सिया सुधि प्रान उबारो ॥३॥

heri thake taṭ sindhu sabai tab, lāy siyā sudhi prān ubāro ||3||

रावन त्रास दई सिय को सब, राक्षसि सों कहि सोक निवारो ।

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

rāvan trās daī siya ko sab, rākṣasi soṃ kahi sok nivāro |

ताहि समय हनुमान महाप्रभु, जाय महा रजनीचर मारो ।

tāhi samay hanumān mahāprabhu, jāy mahā rajanīcar māro |

चाहत सीय अशोक सों आगि सु, दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो ॥४॥

cāhat sīya aśok soṃ āgi su, dai prabhu mudrikā sok nivāro ||4||

बान लग्यो उर लछिमन के तब, प्रान तजे सुत रावन मारो ।

bān lagyo ur lachiman ke tab, prān taje sut rāvan māro |

लै गृह वैद्य सुषेन समेत, तबै गिरि द्रोन सु बीर उपारो ।

lai gṛh vaidya suṣen samet, tabai giri dron su bīr upāro |

आनि संजीवन हाथ दई तब, लछिमन के तुम प्राण उबारो ॥५॥

āni saṃjīvan hāth daī tab, lachiman ke tum prāṇ ubāro ||5||

रावन जुद्ध जु आन कियो तब, नाग की फाँस सबै सिर डारो ।

rāvan juddha ju ān kiyo tab, nāg kī phām□s sabai sir ḍāro |

श्री रघुनाथ समेत सबै दल, मोह भयो यह संकट भारो ॥

śrī raghunāth samet sabai dal, moh bhayo yah saṃkaṭ bhāro ||

आनि खगेस तबै हनुमान जु, बन्धन काटि सुत्रास निवारो ॥६॥

āni khages tabai hanumān ju, bandhan kāṭi sutrās nivāro ||6||

बन्धु समेत जबैं अहिरावन, लै रघुनाथ पताल सिधारो ।

bandhu samet jabaiṃ ahirāvan, lai raghunāth patāl sidhāro |

देबिहि पूजि भलि विधि सों बलि, देउ सबै मिलि मन्त्र बिचारो ॥

debihi pūji bhali vidhi soṃ bali, deu sabai mili mantra bicāro ||

जाय सहाय भयो तब ही, अहिरावन सैन्य समेत संहारो ॥७॥

jāy sahāy bhayo tab hī, ahirāvan sainya samet saṃhāro ||7||

काज किये बड़ देवन के तुम, बीर महाप्रभु देखि बिचारो ।

kāj kiye baṛ devan ke tum, bīr mahāprabhu dekhi bicāro |

कौन सो संकट मोर गरीब को, जो तुमसो नहिं जात है टारो ॥

kaun so saṃkaṭ mor garīb ko, jo tumaso nahiṃ jāt hai ṭāro ||

बेगि हरो हनुमान महाप्रभु ! जो कुछ संकट होय हमारो ॥८॥

begi haro hanumān mahāprabhu ! jo kuch saṃkaṭ hoy hamāro ||8||

लाल देह लाली लसे, अरुधरि लाल लंगूर ।

lāl deh lālī lase, arudhari lāl laṃgūr |

वज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर ॥

vajra deh dānav dalan, jay jay jay kapi sūr ||

अर्थ

पदों में क्रमशः बाल हनुमान का सूर्य को निगलना और देवताओं की विनती पर छोड़ना, बालि से डरे सुग्रीव की सहायता, अंगद दल के हार मानने पर सीता की सुधि लाना, लंका में सीता को मुद्रिका देना, लक्ष्मण के लिए संजीवनी लाना, नागपाश काटने के लिए गरुड़ को लाना और अहिरावण से राम-लक्ष्मण को छुड़ाना — इन प्रसंगों का स्मरण है। आठवें पद में भक्त अपना संकट शीघ्र हरने की प्रार्थना करता है; दोहे में लाल देह, लाल लंगूर और वज्र-देह की वन्दना है। यह संक्षिप्त भावार्थ है, अनुवाद नहीं।

इस दस्तावेज़ के बारे में

इस दस्तावेज़ के पाठ सार्वजनिक (पब्लिक डोमेन) पारम्परिक भक्ति पाठ हैं या हमारी टीम द्वारा लिखे गए हैं, और अपने दर्ज स्रोत व संस्करण के साथ छपे हैं।

अर्थ हमारे शब्दों में संक्षिप्त व्याख्याएँ हैं, विद्वत्तापूर्ण अनुवाद नहीं। किसी पाठ के अपने श्लोकों में बताए लाभ पाठ का अंश हैं, गारण्टी नहीं।

कुछ साधनाएँ परम्परा से गुरु-मार्गदर्शन में की जाती हैं। अपनी परम्परा के मार्गदर्शन का पालन करें।